उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

प्रो0 के0के0 तिवारी

शोध निर्देशक
शिक्षक शिक्षा विभाग
नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), प्रयागराज

ज्योति पाण्डेय

शोधछात्रा (शिक्षाशास्त्र)
नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), प्रयागराज

सारांश –

प्रस्तुत शोध प्रबंध में शोधार्थी द्वारा उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया। प्रस्तुत शोध विषय में वर्णनात्मक अनुसंधान के रुप में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग कर शून्य परिकल्पना के अंतर्गत शोधार्थी ने शैक्षिक उपलब्धि व सामाजिक आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के मध्य सार्थक अंतर की जाँच की गई। प्रस्तुत शोध प्रबंध में वाराणसी मंडल के अंतर्गत जौनपुर जनपद के पूर्वांचल विश्वविद्यालय से संबंद्ध अनुदानित व गैर अनुदानित (शहरी व ग्रामीण) कालेजों के 100–100 विद्यार्थियों का चयन सरल यादृच्छिक न्यादर्श विधि से किया गया है, शोधार्थी द्वारा प्रो0 राजबीर सिंह, प्रो0 राधेश्याम एवं सतीश कुमार द्वारा निर्मित सामाजिक–आर्थिक स्थिति स्तर मापनी का प्रयोग एवं स्नातक द्वितीय के विद्यार्थियों के वार्षिक पूर्व परीक्षा प्राप्तांक के रुप में अध्ययन किया गया है। सांख्यिकी प्रविधि के रूप में मध्यमान, मध्यांक मानक विचलन, एवं t परीक्षण का प्रयोग किया गया है परिणामतः यह पाया गया कि उच्च निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सार्थक अंतर पाया गया उच्च शिक्षा की छात्राओं के निम्न व उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर का शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर सार्थक अंतर एवं अनुदानित महाविद्यलय के छात्रों का उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि से सार्थक अंतर पाया गया।

प्रस्तावना –

मानव को संपूर्ण जगत का सर्वोच्च प्राणी माना गया है जिसके अंदर सद्विवेक सूझ–बूझ एवं अन्य मूल विधाएँ समाविष्ट है। इनका स्थानान्तरण सच्ची एवं वास्तविक शिक्षा से ही संभव है। शिक्षा मानव को एक सामाजिक प्राणी बनाकर खुशहाल जीवन व्यतीत करना सिखाती है, व्यक्ति के व्यक्तित्व का संपूर्ण स्तर से विकास शिक्षा द्वारा ही संभव है इसलिए छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि से शैक्षिक स्तर का मूल्यांकन करते हैं, परंतु वर्तमान समय में शिक्षा व्यवसायपरक् होने के कारण इसमें विभिन्न प्रकार की विसंगतियाँ होती जा रही है, जिससे कमजोर व आर्थिक तंगी से बालक पीछे हो रहे है, तथा उच्च वर्ग विकसित श्रेणी में पहुँच गए हैं बालक को तीव्र गति से अधिगम क्षमता को विकसित करने के लिए उसे सामाजिक अवसर
उपलब्ध कराने होंगे जिससे वह सफल मानव बन सके, मानव समाज में रहता है, परंतु समाज का ढाँचा एक जैसा नहीं होता, कोई व्यक्ति अत्यधिक संपन्न व सामाजिक–आर्थिक स्थिति से मजबूत होता है, तो कोई सामाजिक –आर्थिक स्थिति से कमजोर होता है जिसके कारण शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है।

हलदर दास एवं बंदोपाध्याय (2017) ने कक्षा 11वीं के विद्यालय जाने वाली बालिकाओं की सामाजिक–आर्थिक स्तर के अनुसार शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया तथा शारीरिक स्वास्थ्य का भी अध्ययन किया जिसका परिणाम यह निकला कि अच्छे स्वास्थ्य वाली बालिकाओं व शैक्षिक उपलब्धि का संबंध उच्च सामाजिक – आर्थिक स्तर से सार्थक रूप से सहसंबंधित था, जबकि मध्यम व निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति से संबंधित लड़कियों के समूह के मध्य उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति के पश्चात संबंधित पाया गया।

बलवान सिंह (2018) ने माध्यमिक विद्यालय के बच्चों के विद्यालयी वातावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभांवोध्ययन किया जिसमें यह देखा गया कि शासकीय व अशासकीय विद्यालय में पढ़ने वाले बालक–बालिका के विद्यालयी वातावरण में सार्थक अंतर पाया गया तथा इनका शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है परंतु लैगिक विभेद के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं है।

एकेंस व बरबारिन (2019) ने शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक आर्थिक स्तर के मध्य विभिन्न प्रकार के प्रदत्तों चरों की गहनता के साथ प्रभाव का अध्ययन किया जिसका परिणाम यह पाया गया कि बालक के विभिन्न स्तरों के अधिगम एवं अनुभवों पर काफी हद तक सामाजिक–आर्थिक स्तर प्रभाव डालती है। शोधार्थी द्वारा विद्यार्थियों के सामाजिक–अर्थिक स्तर का उनके शैक्षिक उपलब्धि से पूर्व शोध अध्ययन द्वारा गहन विश्लेषण किया गया, अधिकांशतः शोध माध्यमिक व प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों पर हुए शोध महत्ता को ध्यान रखते हुए उच्चतम विकास के लिए शोधकर्त्री द्वारा यह शोध उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों पर किए गए।

अध्ययन के उदेदश्य

1. उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों के उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना ।
2. उच्च शिक्षा की छात्राओं के उच्च व निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना ।
3. अनुदानित महा विद्यालय के छात्रों की उच्च व निन्न सामाजिक–आर्थिक स्तर का
4. उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना ।

मानव को संपूर्ण जगत का सर्वोच्च प्राणी माना गया है जिसके अंदर सद्विवेक सूझ–बूझ एवं अन्य मूल विधाएँ समाविष्ट है। इनका स्थानान्तरण सच्ची एवं वास्तविक शिक्षा से ही संभव है। शिक्षा मानव को एक सामाजिक प्राणी बनाकर खुशहाल जीवन व्यतीत करना सिखाती है।

बालक को तीव्र गति से अधिगम क्षमता को विकसित करने के लिए उसे सामाजिक अवसर उपलब्ध कराने होंगे जिससे वह सफल मानव बन सके, मानव समाज में रहता है, परंतु समाज का ढाँचा एक जैसा नहीं होता, कोई व्यक्ति अत्यधिक संपन्न व सामाजिक–आर्थिक स्थिति से मजबूत होता है, तो कोई सामाजिक –आर्थिक स्थिति से कमजोर होता है जिसके कारण शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है।

अध्ययन की शून्य परिकल्पना

1. उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों के उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. उच्च शिक्षा की छात्राओं के उच्च व निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
3. अनुदानित महाविद्यालय के छात्रों की उच्च व निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

न्यादर्श प्रारूप –

शोधार्थी द्वारा वाराणसी मंडल के जौनपुर जनपद के पूर्वांचल विश्वविद्यालय से संबंद्व अनुदानित व गैर–अनुदानित (शहरी एवं ग्रामीण) महाविद्यालय के 100–100 विद्यार्थियों का चयन सरल यादृच्छिक न्यादर्श विधि से किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा आंकडों का संग्रह करने के लिए प्रो0 राजबीर सिंह, प्रो0 राधेश्याम एवं सतीश कुमार द्वारा निर्मित सामाजिक–आर्थिक स्थिति स्तर मापनी एवं स्नातक द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों के वार्षिक पूर्व प्राप्तांक का प्रयोग उपकरण के रूप में किया गया।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ–

सांख्यिकीय प्रविधि के अंतर्गत शोधार्थी द्वारा मध्यमान, मध्यांक मानक विचलन व क्रांतिक t अनुपात का प्रयोग किया गया।

प्राप्त आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन व t अनुपात के रूप में किया गया –

सारणी सं0 –01

उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सांख्यिकीय विश्लेषण –

क्र0 सं0	वर्ग	N	M	s.d	d.f	परिकलित t मान	सार्थकता स्तर	तलिका मान	विवरण	
1.	उच्च सामाजिक – आर्थिक स्तर के विद्यार्थी	100	5.59	1.24	198	3.01	.05	1.96	सार्थक	अस्वीकृत
2	निम्न– सामाजिक आर्थिक स्तर के विद्यार्थी	100	3.49	0.01						

सारणी सं0 – 01 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित मध्यमान क्रमशः 5.59 एवं 3.49 है, तथा मानक विचलन क्रमशः 1.24 एवं 0.01 है परिकलित t अनुपात का मान 3.01 है जो .05 स्तर पर सार्थक है, क्योंकि परिकलित t मान 3.01 तालिका मान 1.96 से अधिक है, अतः शून्य परिकल्पना ''उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों के उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नही पड़ता है। अस्वीकृत की जाती है परिणामतः यह कहा जा सकता है कि उच्च शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों उच्च व निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

सारणी संख्या –2

उच्च शिक्षा की छात्राओं के उच्च एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सांख्यिकीय विश्लेषण –

क्र0 सं0	वर्ग	N	M	s.d	d.f	परिकलित t मान	सार्थकता स्तर	तलिका मान	विवरण	
1.	उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर की छात्राएं	100	6.63	0.98	198	4.70	.05	1.97	सार्थक	अस्वीकृत
2	निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर की छात्राएं	100	5.36	0.47						

सारणी सं0 – 02 के अवलोकन से यह ज्ञात हुआ है कि उच्च शिक्षा की छात्राओं के उच्च एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित मध्यमान क्रमशः 6.63 एवं 5.36 है तथा मानक विचलन क्रमशः 0.98 व 0.47 है, परिकलित टी–मान 4.70 है जो .05 स्तर पर सार्थक है, क्योंकि t मान 4.70 तालिका मान 1.97 से अधिक है, अतः शून्य परिकल्पना ''उच्च शिक्षा की छात्राओं के उच्च एवं निम्न सामाजिक – आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है''। अस्वीकृत की जाती है। परिणामतः यह कहा जा सकता है कि उच्च शिक्षा की छात्राओं के उच्च एवं निम्न सामाजिक – आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

सारणी संख्या – 3

अनुदानित महाविद्यालय के छात्रों की उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सांख्यिकीय विश्लेषण ––

क्र0 सं0	वर्ग	N	M	s.d	d.f	परिकलित t मान	सार्थकता स्तर	तलिका मान	विवरण	
1.	उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के अनुदानित महाविद्याल य के छात्र	60	4.7	3.32	118	3.55	.05	1.96	सार्थक	अस्वीकृत
2	निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के अनुदानित महाविद्याल के छात्र	60	6.3	1.4						

सारणी सं0 – 03 से यह विदित होता है कि अनुदानित महाविद्यालय के छात्रों की उच्च व निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित मध्यमान क्रमशः 4.7 व 6.3, मानक विचलन 3.32 व 1.4 तथा परिकलित टी–प्राप्तांक का मान 3.55 है जो .05 स्तर पर सार्थक है, क्योंकि परिकलित T मान 3.55 तालिका मान 196 से अधिक है अतः शून्य परिकल्पाना ''अनुदानित महाविद्यालय में अध्ययनरत् छात्रों की उच्च व निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्राभव नहीं पड़ता है। '' अस्वीकृत की जाती है। परिणामतः

यह ज्ञात होता है कि अनुदानित महाविद्यालय के छात्रों की उच्च व निम्न सामाजिक – आर्थिक स्तर उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष – प्रस्तुत शोध अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि उच्च शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक – आर्थिक स्तर का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है। पूर्व शोध अध्ययन के आधार पर (**मिर्जा 2001**) में अपने शोध अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि व सामाजिक–आर्थिक स्थिति के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करने के लिए शोधकार्य किया, जिसमें यह परिणाम निकला कि सामाजिक–आर्थिक स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

- **गुप्ता, एस0पी0 गुप्ता, अलका (2004)** – उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबाद, शारदा बुक भवन।
- **सिंह अरूण कुमार (2006)** – मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, वाराणसी : मोती लाल बनारसी दास।
- **रामपाल** :– अधिगम वातारण तथा शैक्षिक उपलब्धि शोध पत्र शिक्षक अभिव्यक्ति, हण्डिया पी0जी0 कालेज इलाहाबाद, **(2016)**